मेरी बात...

शौर्य की सांस्कृतिक विरासत

'भारतबोध' पत्रिका का यह चौथा अंक है। यह अंक भी सुधि पाठकों के वैचारिक पटल को समृद्ध बनाने में सहायक सिद्ध हो यही प्रयास है। यह अंक भारत के इतिहास में वीरता, साहस और नेतृत्व का प्रतीक कही जाने वाली 'रानी दुर्गावती' को समर्पित है। इसका प्रमुख उद्देश्य है भारत की संपन्न और सुदृढ़ ऐतिहासिक विरासत को पाठकों के बीच उजागर कर उसे संरक्षण प्रदान करना। भारत की संपन्न ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में रानी दुर्गावती की जीवनी और उनकी वीरता का पुनरावलोकन करते हुए इतिहास में महिलाओं के योगदान को मान्यता और सम्मान देने की महत्वाकांक्षा को साकार करना है। आपको ज्ञात है कि भारतीय इतिहास में मुगल काल की अपनी एक महत्ता, विशेषताएं एवं कार्य हैं जो कि पाठकों के एक बड़े समूह को सहज ही अपनी ओर आकृष्ट करती हैं। रानी दुर्गावती की जीवन गाथा पर केन्द्रित 'भारतबोध' का प्रस्तुत अंक रानी दुर्गावती की विशेषता, उनके योगदान की महत्ता, और उनके व्यक्तित्व का विस्तृत विश्लेषण करता है। यह अंक इतिहास में मानव की सामाजिक, सांस्कृतिक एवं भावनात्मक अभिव्यक्ति को प्रदर्शित करता है। इतिहास सामाजिक जीवन के मूल्य की सम्यक संरचना का आधार है। किसी समाज की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि उसमें पाए जाने वाले उच्चतम मूल्य एवं आदर्श की वह चेतना है जो व्यक्ति को मनुष्य बनाए रखती है।

हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि भारतीय इतिहास में महिलाओं की भूमिका सदा ही महत्वपूर्ण रही है चाहे वह रानी दुर्गावती हों, रानी लक्ष्मी बाई, या रजिया बेगम। सबने ही भारतीय इतिहास, जो की एक पितृसत्तात्मक समाज को प्रदर्शित करता था उसमें नारी सशक्तिकरण की एक नई प्रभा को उजागर किया है एवं जाति, धर्म, संप्रदाय में बिखरे भारतीय समाज को एकजुट किया है। अतः इन्हीं आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए समाज में नारी सशक्तिकरण को बढ़ावा देती हुई गोंड रानी दुर्गावती को समर्पित है यह अंक । भारत एक समृद्ध ऐतिहासिक पहचान वाला राष्ट्र है जहां पुरुष एवं महिला शासकों ने मिलकर आज जो भारत हम देखते हैं उसे बनाने की आधारशिला को सुदृढ़ किया है। भारतीय इतिहास में, पुरुष शासकों का वर्णन मुख्य रूप में दिखाई देता है। वही उस कालखंड में कुछ महिलाएँ भी शासकों के रूप में उभरी जिन्होंने भारत की रूप-रेखा को सुदृढ़ करने में प्रमुख योगदान दिया तथा जो भावी पीढ़ी की महिलाओं के लिए हमेशा एक प्रेरणा का स्रोत रहीं।

कहा गया है कि किसी समाज को अगर आगे की ओर अग्रसर करना है तो वहाँ की महिलाओं का सुदृढ़ होना अति आवश्यक है। इतिहास की ऐसी ही रानी की आत्मकथा एवं जीवनी का प्रसार कर परंपराओं को सर्वेक्षण प्रदान करते हुए आगे आने वाली पीढ़ियों को सशक्त करने हेतु भारतबोध का यह अंक रानी दुर्गावती पर केंद्रित है।

आप जानते हैं कि शासक और शासन हमेशा ही एक स्थान एवं समय से जुड़े होते हैं। इसी प्रकार रानी दुर्गावती का क्षेत्र मंडलागढ़ है जो मध्यप्रदेश में है। जब हम भारतीय इतिहास में मध्य भारत की बात करते हैं तो उसमें मध्य प्रदेश के गोंडवाना की ऐतिहासिक कहानी को जरूर देखते हैं और उसी कड़ी में युद्ध, आंदोलन, क्षेत्र विस्तार जैसे कार्यों को अनदेखा नहीं कर सकते। यही वह वैचारिक आधार है जिसने मध्य प्रदेश के इतिहास को ऐतिहासिक पन्नों में जगह दी। रानी दुर्गावती जैसी चरित्र को उजागर करके मेरा उद्देश्य मध्यप्रदेश के सामाजिक, ऐतिहासिक, एवं सांस्कृतिक दिशा से पाठकों का परिचय कराना भी है। मध्य भारत के ऐतिहासिक राग को अगर समझना है तो मध्य प्रदेश को, यहां के सामाजिक, सांस्कृतिक जीवन को, युध्द नीति को, एवं धार्मिक शासकों के मूल्य बोध को समझना होगा।

रानी दुर्गावती से सम्बंधित मध्य प्रदेश का इतिहास सन् 1524 से शुरू हुआ जो कि लगभग 500 वर्ष पुराना है। यह मुख्य तौर पर रजवाड़ा शासकों एवं उनके सामाजिक, सांस्कृतिक कार्यों से संबंधित है। इस कालखंड में मुख्यतः अकबर, बाज़ बहादुर, राणा उदय सिंह-II आदि सक्रिय रहे हैं। जिसने शासन कार्य, राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक कार्य नहीं जाना वह मध्य प्रदेश के इतिहास के साथ न्याय नहीं कर सकता। न ही वहाँ की महान गोंड रानी दुर्गावती को समझ सकता है। दुर्गावती ना केवल एक राजा की बेटी, राजा की पत्नी या रानी है अपितु एक समाज को सुदृढ़ता प्रदान करने वाली शासिका रही। उन्होंने स्वालंबन, आत्मनिर्भरता जैसे व्यवहारों का परिचय इतिहास में करवाया। आपको मध्य प्रदेश में कई ऐसे परिवार मिल जाएंगे जो रानी दुर्गावती को एक देवी के रूप में देखते एवं पूजते हैं। तात्पर्य यह है रानी दुर्गावती ने सदा चाहे वह युध्द से संबंधित हो, प्रजा से, या शासन से, अपनी प्रजा का लालन-पालन किया। महिला होकर भी जिस निडरता से उन्होंने राज्य चलाया वह प्रशंसा के योग्य है। यहीं कारण है कि शेष भारत से अलग यहां के स्थानीय लोगों में उनका दर्जा एक देवी के रूप में है।

रानी दुर्गावती के इस अंक की विशेषता आज के समय के महिलाओं को उनकी स्थिति सुदृढ़ करने में मदद करती है तथा यह बताती है कि 1550 से शुरू हुई नारी सशक्तिकरण, चतुर युध्द नीति का बोध कराती हुई रानी दुर्गावती आज के युवाओं के लिए एक प्रेरणा की पात्र हैं। धातव्य है कि भारतीय इतिहास से पितृसत्तात्मक समाज का बोध होता है. जिसकी वजह से महान पुरुष शासकों के बीच में कुछ महिला शासकों को इतिहास के पन्नों में वह स्थान न मिल सका जिनकी वह हकदार रही हैं। तथापि वर्तमान भारत एवं समाज पितृसत्तात्मक समाज का खंडन करते हुए इतिहास के उन सभी पक्षों पर प्रकाश डाल रहा है, जिनका उजागर होना सामाजिक हित के लिए अत्यंत आवश्यक है।

1524 में उत्तर प्रदेश के बांदा जिले में राजा कीर्तिसिंह चंदेल के घर जन्मी दुर्गावती का जन्म दुर्गा अष्टमी के दिन हुआ था। अकबरनामा के अनुसार उन्हें बचपन से ही घुड़सवारी, तलवारबाजी, तीरंदाजी जैसी युद्ध कलाओं की शिक्षा मिली थी और वो तीर और बंदूक चलाने में भी माहिर थीं। 18 साल की उम्र में उनका ब्याह गोंड राजवंश के राजा संग्राम शाह के बड़े बेटे दलपत शाह से हो गया था जो गढ़ मंडला के शासक थे। 1550 ई. में राजा की मृत्यु के उपरांत अपने 5 वर्षीय पुत्र को राजगद्दी पर बिठा स्वयं दुर्गावती ने शासन अपने हाथों में लिया। उनके शासनकाल में उन्होंने अपने प्रदेश को विकसित करने के लिए कई सामाजिक और आर्थिक सुधार किए। रानी दुर्गावती का इतिहास सिर्फ उनकी वीरता और साहस की कहानी

नहीं है, बल्कि उनके अंतिम संघर्ष और बलिदान की कथा भी हमें एक गहरी सीख प्रदान करती है। इस प्रकार, रानी दुर्गावती का इतिहास हमें न केवल उनके समय की विचारशीलता को समझने में मदद करता है, बल्कि आज के समय में भी नारी " शक्ति और नेतृत्व की महत्वपूर्ण भूमिका को समझने में सहायक है।

भारतबोध का यह चौथा अंक मध्यकालीन इतिहास मुख्यतः मध्य प्रदेश से महिला शासक रानी दुर्गावती के जीवन चरित्र, उनके कार्यों, उनके समकालीन शासक, सामाजिक स्थिति आदि का पूर्ण रूप से वर्णन करता है। इस अंक के माध्यम से पाठक रानी दुर्गावती के बारे में अवगत होने के साथ-साथ उनके द्वारा प्रयोग की गई पद्धतियों के व्यावहारिक उपयोग से परिचित हो सकेंगे। अध्येता यह भी जान सकेंगे की इतिहास में नारी की भूमिका क्या रही है एवं किस तरह प्राचीन काल से ही नारी समाज को प्रभावित करती आ रही है एवं उसे समय दर समय तराश रही है।

प्रस्तुत लेख में डॉ. आनंद सिंह राणा, डॉ. विपिन बिहारी ब्यौहार, डॉ. योगेन्द्र भारद्वाज, पीयूष कुमार दूबे, डॉ. ज्योति यादव समेत कई विद्वानों और शोधार्थियों के लेख सम्मिलित किए गए हैं। इसमें सम्मिलित प्रत्येक लेख रानी दुर्गावती के एक भिन्न पहलू को दर्शाने में सफल हैं।

इस अंक की प्रथम रचना बुध पाल सिंह ठाकुर द्वारा प्रस्तुत किया गया है जिसका शीर्षक 'वीरांगना रानी दुर्गावती की गौरवगाथा' है जिसमें लेखक ने बड़े ही सुंदर ढंग से रानी दुर्गावती के जन्म से लेकर मृत्यु तक की जीवन यात्रा, जिसमें उनके जन्म का समय, उनके माता-पिता, बाल सहेलियां, उनके शिकार करने की कला, राजा दलपति से विवाह, पुत्र रत्न की प्राप्ति, तालाब-बावड़ी का निर्माण, मुग़ल संदेश, युद्ध, उनके अमर हो जाने, एवं समाधि बनने जैसे वृत्तांत को एक पद्य के रूप में पिरोया है। जो पाठकों की रुचि एवं ज्ञान को बढ़ाने हेतु प्रोत्साहित करता है।

द्वितीय लेख डॉ. अतुल दुबे द्वारा रचित है जिसका शीर्षक 'रानी दुर्गावती यशोगाथा' है, जिसमें रानी दुर्गावती की वीरता का परिचय कराते हुए उनके राज्य के दरबारियों का विस्तृत विश्लेषण किया गया है।

इसी प्रकार तृतीय लेख डॉ. आनंद सिंह राणा द्वारा शीर्षक 'वीरांगना रानी दुर्गावती का साम्राज्य और युद्ध नीति' के रूप में लिखा गया है। इसमें आनंद जी ने बताया है कि किस तरह गोंड वंश की नींव रखी गई एवं रानी दुर्गावती जो कि इतिहास की एक महत्वपूर्ण कड़ी हैं उसे भारतीय इतिहास के पन्नों पर क्यों अभी तक सराहा नहीं गया। उन्होंने इतिहास लेखन की कला पर सवाल उठाते हुए इतिहासकारों से प्रश्न किया है तथा उसका जटिल अन्वेषण भी किया है। इसके अलावा रानी दुर्गावती की युद्ध नीति पर विशेष बल देते हुए उनके द्वारा प्रयुक्त 9 पारंपरिक युद्ध व्यूह जिसमें मगर व्यूह, क्रौंच व्यूह, अर्धचंद्र व्यूह, ओरमी व्यूह, गरुड़ व्यूह, व्रज व्यूह, मंडल व्यूह, चक्रशकट व्यूह, और श्रीनगातका व्यूह का भी विस्तृत विश्लेषण किया है।

चतुर्थ लेख डॉक्टर विपिन बिहारी ब्यौहार द्वारा 'वीरांगना रानी दुर्गावती प्रभावी शासन व्यवस्था : अष्ट आभूषण के विशेष संदर्भ में' प्रस्तुत है जिसका उद्देश्य पाठकों तक रानी दुर्गावती के प्रभावी शासन को

उजागर करना है। इन्होंने प्राचीन काल में विश्व में जितने भी बड़े-बड़े युद्ध हुए हैं उनमें स्त्रियों की भूमिका पर प्रकाश डाला है एवं उन्हें सराहा है। प्रस्तुत लेख में विपिन जी ने रानी दुर्गावती के दरबारियों जिनको अष्ट आभूषण कहा जाता है उनका विशेष विश्लेषण किया है।

डॉ. ज्योति यादव द्वारा लिखित पांचवा लेख जिसका शीर्षक 'रानी दुर्गावतीः वॉइस ऑफ हीरोइक हिस्ट्री' बताता है कि किस तरह रानी दुर्गावती मध्यकालीन इतिहास में एक सशक्त नारी की भूमिका निभाती हैं। उनके जीवन का संक्षिप्त परिचय देते हुए मुख्यतः इस बात को दिखाया गया है कि किस तरह मध्य प्रदेश के स्थानीय लोग उनके सामाजिक कल्याण एवं व्यवहार से प्रभावित होकर उन्हें एक देवी के रूप में पूजते हैं, रानी दुर्गावती को देवी दुर्गा मानते है एवं किस प्रकार वह मुगल काल में जब चारों ओर पुरुष शासकों की प्रधानता थी तब एक अकेली नारी होकर अपने क्षेत्र एवं प्रजा की रक्षा की तथा अपने समकालीन शासकों को युद्ध में नाकों तले चने चबाने पर मजबूर कर दिया और नारी सशक्तिकरण का प्रमाण देती हुई वीरगति को प्राप्त हुई।

अगला लेख 'रानी दुर्गावती के जनहित कार्यों का एक अध्ययन' डॉ. रेखा पटेल द्वारा लिखित है। इसमें रानी दुर्गावती का अपनी प्रजा के प्रति प्रेम की भावना को दिखाते हुए उनके द्वारा सामाजिक कल्याण हेतु जो कार्य कराए गए, उनको बताया गया है जिसमें तालाब एवं कुओं का निर्माण, राज्य में टकसाल की स्थापना, मंदिर निर्माण, आदि की जानकारी दी गयी है। वो बताती है कि रानी दुर्गावती के राज्य में लगान स्वर्ण मुद्राओं और हाथियों में चुकाया जाता था। इस प्रकार पाठकों को इस लेख से रानी दुर्गावती से उनकी प्रजा का प्रेम देखने को मिलेगा।

सरोज गुप्ता द्वारा लिखा गया लेख 'प्रेम की धधकती आग : रानी दुर्गावती' है जिसमें उन्होंने रानी दुर्गावती की वीरता और उनके कुशल प्रसाशन का विश्लेषण किया है। प्रस्तुत लेख में विभिन्न स्थानों पर पद्यों का प्रयोग लेख को अत्यंत रुचिकर बनाता है।

आठवाँ लेख डॉ. शंकर दयाल भारद्वाज द्वारा लिखा गया है जिसका शीर्षक 'उर्वरा सर्वतो भूमि' है जिसमें रानी दुर्गावती की कृषि व्यवस्था एवं सुशासन का उल्लेख किया गया है।

प्रस्तुत अंक में सम्मिलित डॉक्टर योगेंद्र भारद्वाज का लेख 'आजादी के अमृत काल में रानी दुर्गावती के विचारों की प्रासंगिकता' रानी दुर्गावती के उन विचारों पर चर्चा है जो आजादी के इस अमृत काल में प्रासंगिक है। यह कहना अप्रत्याशित नहीं होगा कि भारत के सामाजिक और आर्थिक समृद्धि में रानी दुर्गावती का जीवनवृत्त और उनके विचार अनुकरणीय है। लेखक ने भूत की वर्तमान से तुलना करते हुए बताया है की रानी दुर्गावती अपने राज्य की नीति एवं आंतरिक सुरक्षा हेतु अपनी गुप्तचर संस्था के साथ नियमित रूप से बैठती थी। जैसा कि वर्तमान काल में किसी देश के प्रधानमंत्री अपनी गुप्तचर संस्था के साथ बैठकर करते है और अपनी कूटनीति को कार्यान्वित करते है । इस अंक में लेखक द्वारा रानी दुर्गावती के लोकतांत्रिक शासन की झलक पाठकों को देखने को मिलेगी।

'दुर्गावती से बन गई वीरांगना रानी' लेख गिरजा शंकर अग्रवाल द्वारा प्रस्तुत है जिसमें उन्होंने एक साधारण लड़की के बाल्यकाल से लेकर उनसे रानी बनते हुए तथा रानी से एक योद्धा बनने की जीवन प्रक्रिया का खूबसूरती से वर्णन किया है। लेखक दुर्गावती को जुझारू एवं वीर महिला के रूप में प्रदर्शित करने में पूर्ण रूप से सफल हुए हैं।

अगला लेख लक्ष्मण राज सिंह मरकाम 'लक्ष्य' द्वारा 'राज माता रानी दुर्गावती बलिदान दिवस है' जिसमें उन्होंने रानी दुर्गावती के शासन विस्तार की चर्चा की है। प्रस्तुत लेख में रानी दुर्गावती के युद्ध कौशल के साथ साथ उनके शासन काल में वहाँ की प्रजा की सम्पन्नता पर भी प्रकाश डाला गया है।

अगला लेख पीयूष कुमार दुबे द्वारा लिखित 'एक रानी के देवी हो जाने की महागाथा' है। लेखक यह बताने में सफल हुए हैं कि हजार वर्षों का कालखंड भारतीय समाज और संस्कृति को अपने अस्तित्व और अस्मिता की रक्षा में किए गए भीषण संघर्षों का कालखंड रहा है। इसमें ही एक रानी थी जिन्होंने अपने राज्य की रक्षा के लिए अकबर की सेना से युद्ध किया। लेखक का मानना है कि यह कथा इतिहास के वर्णन जैसी सपाट नहीं है अपितु यह तो मातृभूमि की वेदी पर बलिदान देकर अपने लोगों के लिए रानी से देवी हो जाने की गाथा को उजागर करता है। लेखक ने यह भी बताया है कि किस प्रकार लोक के स्वरों में रानी का स्मरण वीरता और प्रेम दोनों के लिए किया गया है।

अगला लेख प्रोफेसर ए.डी.एन. बाजपेयी 'सौंदर्यशील और सुशासन की देवी रानी दुर्गावती' है। लेख के माध्यम से रानी दुर्गावती को एक सर्वगुण संपन्न महिला के रूप में प्रदर्शित किया गया है जो प्रेम एवं पराक्रम दोनों की देवी मानी गई है। लेखक ने बड़े ही अनूठे तरीके से रानी दुर्गावती पर किए जाने वाले शोधपत्रों को उजागर किया है एवं स्त्रियों के शारीरिक, बौद्धिक, मनोवैज्ञानिक, एवं आध्यात्मिक विकास के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तहत रानी दुर्गावती और स्त्री शिक्षा का समावेश आवश्यक बताया है।

प्रस्तुत चौदहवां लेख 'रानी दुर्गावतीः द इंडोमीटेबल क्वीन ऑफ द नर्मदा वैलीः ए हिस्टॉरिकल एनालिसिस' संजीव कुमार मिश्रा द्वारा लिखित है जो रानी दुर्गावती को अपने लोगों के प्रति सशक्त प्रशासन, न्याय कल्याण को बताता है। इसके माध्यम से पाठक रानी दुर्गावती के साम्राज्य, अकबर एवं रानी दुर्गावती के बीच राजनीतिक व्यवहार, क्षेत्र विस्तार नीति, नराई नाला का युद्ध को विस्तार से पढ़ सकेंगे और रानी दुर्गावती का योगदान जो भारतीय पीढ़ीयों को साहस, वीरता एवं अखंडता से जोड़ता है, उससे परिचित हो सकेंगे।

इस अंक का अंतिम लेख श्री प्रकाश उइके द्वारा 'महान साम्राज्ञी रानी दुर्गावती धार्मिक एवं सांस्कृतिक संरक्षक और तत्कालीन न्यायिक प्रशासनिक व्यवस्था' के रूप में लिखा गया है। लेखक द्वारा रानी दुर्गावती के 14 वर्ष के शासन काल को शब्दों में पिरोया गया है। सुधी पाठक इन वर्षों में रानी दुर्गावती का राजधानी गढ़ा में आगमन, पति की मृत्यु के पश्चात् राज्य की बागडोर, स्वामी विठ्ठलनाथ का आगमन, गोंडवाना कालीन राजाओं द्वारा विद्वानों को पराश्रय, धार्मिक एवं सांस्कृतिक संरक्षण के कार्य, अकबर का हमला, न्यायिक प्रशासकीय व्यवस्था, जीएसटी प्रणाली, स्थानीय प्रशासन, सैन्य प्रशासन आदि को भली-भांति जानने में सक्षम होंगे।

अस्तु, भारतबोध का रानी दुर्गावती पर केन्द्रित यह अंक हमारे विद्वान पाठकों के समक्ष प्रस्तुत है। प्रोफेसर ए.डी.एन. बाजपेयी, डॉक्टर आनंद सिंह राणा, बुधपाल सिंह ठाकुर, डॉ. विपिन बिहारी व्यौहार, डॉ. रेखा पटेल, डॉ. योगेन्द्र भारद्वाज, इत्यादि सभी के लेखों के पुनः प्रकाशन की मौखिक अनुमति ली गयी है. एवं उसके लिए मैं आभारी हूं। समस्त विद्वान लेखकों का आभार जिन्होंने अपने महत्वपूर्ण लेखों से 'भारतबोध' के इस अंक का समृद्ध सृजन किया। आवरण पृष्ठ का चित्र शोधार्थी द्वारा निर्मित है।

अंत में 'भारतबोध' के संपादकीय समूह, प्रकाशक और प्रकाशन काम से जुड़े मित्रों का आभार।

सादर ।

आचार्य (डॉ.) चन्दन कुमार